॥ श्रीः ॥

रहिमनशतक ॥

जिसमें

श्री अब्दुलरहीमखां कवि (रहीम) के कहे हुये नानाप्रकार के सामयिक अत्युत्तम दोहे व सोरठा वर्णितहैं जिनके पढ़ने से चित्त आनन्दमय होजाता है

दो० तनु रहीम है कर्मवश मनराखौ वहि ओर ।
जलमें उलटी नाव ज्यों खैंचत गुनके जोर ॥

जिसको

पं० नीलकण्ठ-द्वारकाप्रसाद

बुक्सेलर अमीनाबाद लखनऊ ने मुद्रितकराकर प्रकाशित किया

Printed at the Lucknow Printing Press.

सन् १९०६ ई०

प्रथमबार २०००] [मूल्य -)

श्रीगणेशायनमः ॥

रहिमनशतक ॥

दोहा ॥

नात नेह दूरी भली लो रहीम जियजानि ॥
निकट निरादर होतहै ज्यों गड़ही को पानि १

सोरठा ॥

चूल्हा दीन्हो बारि नाता रहै सो जरिगयो ॥
रहिमन उतरे पार भार झोंकि सब भार में २ ॥

दोहा ॥

रहिमन सांचे सूर को बैरी करत बखान ॥
साधु सराहै साधुता यतीयोषिता जान ३ ॥
रहिमन ओछ प्रसंग ते नितप्रति लाभ बेकार ॥
नीर चुरावै सम्पुटी मारु सहै घरियार ४ ॥
करत निपुनई गुन बिना रहिमन निपट हजूर ॥
मानौं टेरत बिटप चढ़ि यहिप्रकार हम कूर ५ ॥
रहिमन प्रीति सराहिये मिले होत रंग दून ॥
ज्यों हरदी जरदी तजी तजी सपेदी चून ६ ॥
जुपै पराक्रम सो भलो सम्पति मिलै रहीम ॥
पेट लागि बैराट के तपत रसोई भीम ७ ॥

रहिमन खोटी आदिको सो परिणाम लखाय ॥
ज्यों दीपक तमको भखै कज्जल बमन कराय ८
जेहि अञ्चल दीपक दुरो हन्यो सो ताही गात ॥
रहिमन असमय के परे मित्र शत्रु है जात ९ ॥
जबलगि वित्त न आपने तबलगि मित्त न कोय ॥
रहिमन अम्बुज अम्बुबिन रवि ताकर रिपु होय १०
रहिमन आलस भजनमें विषय सुखहिं लपटाय ॥
घास चरै पशु स्वाद ते गुरु गलियाये खाय ११
सबै कहावैं लशकरी सब लशकर को जाय ॥
सैल सड़ाके जो सहै सोई जगीरैं खाय १२
यद्यपि अवनि अनेक हैं तोयवन्त सर ताल ॥
रहिमन एकै मानसर मनसा करत मलाल १३
बड़े जो छोटेन सों बँधे रहिमन यह श्रुति लेख॥
हय हजार को बांधिये लै छदाम की मेख १४
रहिमन कुसमय के परे कुथलहु जाइ भागि ॥
ठाढ़हू जियत घूर पै जो घरलागै आगि १५
बड़े पेट के भरन को है रहीम दुख बाढ़ि ॥
याते हाथी हहरिकै दियो दांतदुइ काढ़ि १६
धूरि चढ़ावत शीशपर कहु रहीम केहिकाज ॥
जेहिरज ऋषि पतनीतरी सो ढूंढ़त गजराज १७
रहिमन परघर जानको कत कोऊ पछितात ॥
सम्पति से सब जातहैं बिपति सबै लैजात १८

रहिमन वोछे संग बसि सुजन बंचते नाहिं ॥
नैना सैना करत हैं उरज ऊमड़े जाहिं १९
जोअनुचितकारीतिन्हैं लगै अंक परिणाम ॥
लखे उरज उर बेधिये क्यों नहोयमुखश्याम२०
रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून ॥
पानी गये न ऊबरैं मुकता मानुष चून २१
जाहि ब्यवस्था परत है सो आवत परदेश ॥
चित्रकूट मां बसिरहे रहिमन अवध नरेश २२
रहिमन सांची प्रीतिको काकरि सकत कुसंग ॥
चंदन बिष ब्यापै नहीं लपटे रहत भुजंग २३
मान सहित बिषखायके शंभु भये जगदीश ॥
बिनआदरअमृतभख्यो राहु कटायो शीश २४
भलेभई घरते छुटो हँस्यो शीस परि खेत ॥
काके काके नवत हम अपन पेटके हेत २५
रहिमन खोजे ऊख में जहां रसनकी खानि ॥
जहांगांठि तहँ रस नहीं यहीप्रीति की हानि२६
रहिमन धागा प्रेमको मति टूरो चटकाय ॥
टूटे से फिर ना मिलै मिले गांठिपरिजाय२७
जो रहीम दर दर फिरै मांगु मधुकरी खाहिं ॥
यारो यारी छंड़िये वै रहीम अब नाहिं२८
जो गरीब पर हित करैं वै रहीम बड़लोग ॥
काह सुदामा बापुरो कृष्ण मिताई योग २९

रहिमन सीधी चालमों प्यादा होत वजीर ॥
फरजी शाह न ह्वै सकै यह टेढ़ी तासीर ३०
रहिमन ओछे के किये केतो कर बढ़ि काम ॥
तीनि पैग बसुधा भई तेहूं बामन नाम ३१
ह्वै रहीम चुप ह्वै रहौ देखि दिनन को फेर ॥
जब आवैगी शुभघरी बनत न लागै देर ३२
परिरहिबो मरिबो भलो सहिबो कठिन कलेश ॥
बामन ह्वै बलिकोछल्यो भलो दियो उपदेश ३३
रहिमन दुइ दिनकेपरे सबहि बिकलपहिचान॥
कछुकशोचधनहानिको बहुतशोच हितहानि३४
रहिमन यक दिन वै रहैं बीचन सोहत हार ॥
बायु जो ऐसी बहिगई बीचन परे पहार ३५
छोट जो तनको बढ़ैं तौ रहीम इतराय ॥
प्यादा जो फ़रज़ी भयो टेढ़ो टेढ़ो जाय ॥३६॥
रहिमन बात अगम्य की कहन सुनन की नाहिं॥
जोजानत सोकहतनहिं कहतसो जानतनाहि३७
जोनृप बासरनिशि कहै तो कचपची देखाउ ॥
जो रहीम रहिबो चहै कहौ उसी को दाउ ३८
रहिमन यहि संसार में सबसुख मिलनअगोट ॥
जैसे फूटे नरद के परत दुहुन शिरचोट ३९
रहिमन सुधिसबतेभली लगै जो बारम्बार ॥
बिछुरे मानुष फिरि मिलैं यहै जान अवतार ४०

आये राम रहीम सब किये मुनिनको भेष ॥
जब जाको विपदापरै सो जावै परदेश ॥४१॥
रहिमन रिसकोछांड़िकै करौ गरीबी भेष ॥
मीठे बोलौ नै चलौ सबै तुम्हारो देश॥४२॥
जो रहीम पग तर परै रगरि नाक अरु शीस ॥
निठुर आगे रोइबो आंसु डारिबो खीस ४३
जोरहीम गति दीपकी सुत सपूतकी सोय ॥
बड़ो उजेरो तेहि रहे गये अंधेरो होय ॥४४॥
ज्यों रहीम गति दीपकी कुल कपूत गति सोय ॥
बारे उजियारो बड़ो बढ़े अंधेरो होय ॥४५॥
आपु न काहू कामके छाया दल फल फूल ॥
रहिमन औरै बिटप को रोकत पेड़ बबूल ॥४६॥
याते जान्यौ मन भयो जरि बरि भस्म बनाय ॥
रहिमन जाहि लगाइये सो रूखो ह्वै जाय॥४७॥
दीनबिलोकत सबहिको दीनहि लखत न कोय॥
रहिमन भलीसो दीनता नरो देवता होय ॥४८॥
दिव्य दीनता के रसहि का जानै जग अन्ध ॥
भली बिचारी दीनता दीनबन्धु,से बन्धु॥४९॥
रहिमनहरिछबिहगबसी पर छबि हगन समाय ॥
जैसे भरी सराय में पथिकलोगफिरिजाय५०
पियबियोगते दुसहदुख सूने दुख ते अन्त ॥
होतअन्तते फिरिमिलन तोरि सिधाये कन्त ५१

रहिमन बहुत न फूलिये चित्त आपनो जानि ॥
अति फूले से सहिजनी डार पात की हानि ५२
जो रहीम कोटिन मिलै धृक जीवन जगमाहिं ॥
आदर घटे नरेश ढिग बसेरहे कछु नाहिं ॥ ५३ ॥
जलहिमिलापरहीमज्यों कियो आप सम छीर ॥
अँगवैआपुहिआपुलखि सकल आंचकीभीर ५४
रहिमनकुटिल कुहारज्यों कैडारै दुइ टूक ॥
चतुरन के कसकत रहैं चूक समय की हूक ५५
गरज आपनी आपसे कहि रहीम नहिं जाय ॥
जैसे कुलकी कुलवधू परघर जात लजाय ५६
राम न जाते हिरणसंग सिया न रावण साथ ॥
जो रहीम भावी प्रबल होत आपने हाथ ५७
जो रहीम सुख होतहै बढ़े आपनो गोत ॥
जैसे बड़ि अंखियां लखे आंखिनको सुखहोत५८
रहिमन अपने गोत की सबै चहत उत्साह ॥
मृगउछलत आकाशको भूमे खनत बराह ५९
मनसों नहीं रहीम प्रभु दृगसों नहीं देवान ॥
दृग देखैं जेहि आदरैं मन तेहिहाथ बिकान६०
जो रहीम घर घुसरहैं केदली सुपति सुशील ॥
तो रहीम तिनते भले पथके अपथ करील ६१
सम्पति सम्पतिवार को सम्पतिवारो देत ॥
दीनबन्धु बिन दीनकी को रहीम सुधि लेत६२

रहिमन नीचे संग से लगतकलंक नकाहि ॥
दूधौ हाथ कलार के मदै कहन सब ताहि ६३
बरु रहीम कानन बसी असन करी फल तोय ॥
बन्धु मध्य गति दीनह्वै बसिबोउचितनकोय६४
करम हीन रहिमनलखौ धसो बड़े घर चोर ॥
चिन्ततही बहुलाभ के जागत ह्वैगा भोर ६५
रहिमन चित्त अधर्म की जात न लाग बार ॥
चोरी करि होरी रची भई छिनक में छार६६
रहिमन पेटे सों कहत क्यों न भई तुम पीठि॥
भूखे मान बिगारहू भरे बिगारहु डीठि ६७
रहिमन पेटे सों कहत बार बार समुझाय ॥
जो तुम अनखाये रहो कत कोऊ अनखाय ६८
रहिमन पैंड़ा प्रेमको निपट सिलसिलीगैल ॥
बिछलत पावपिपीलको लोग लदावत बैल ६९
पीतिहरत तमभ्रममिटत नैन खुलत बेचूक ॥
का रहीम रबिको घट्यो देख्यो जो न उलूक७०
भीति गिरी पाषाण की अररानी कहु काय ॥
अब रहीम धोखो भयो को लागै केहि ठाय ७१
रहिमन घरिया रहटकी त्यों वोछे की डीठि ॥
रीतिहि सन्मुख होत है भरी देखावै पीठि ७२
खर्च बढ़ो रोजी घटी नृपति निठुरमनकीन ॥
रहिमन वैनर का करैं ज्यों थोरे जलमीन ७३

आवत काम रहीम है बन्धु बिरलगाहि मोह ॥
जीरन पेड़हि के भये राखत बरहि बरोइ ७४
कहा निगोड़ो तरानिगो जो उवौतरैयन खोय ॥
रहिमन राज सराहिये जो बुधकर बिधुहोय ७५
मथतमथतमाखन रह्यो दही दही बिलगाय ॥
रहिमनसो बड़मोलभो भीर परे ठहराय ॥ ७६ ॥
नहिं तरवर फलखातहै सरिता पियत न पानि ॥
रहिमनज्योंपरकाजको सम्पतिसहितसुदानि ७७
होयन जाकीछांहढिक फल रहीम अति दूर ॥
बाढ़्योसोबिनकाजजग जैसे तार खजूर ७८ ॥
जेहिरहीमबिधिबड़कियो घटको डारत काढ़ि ॥
चन्द्र कूबरो दूबरो तेहूं नखतते बाढ़ि ७९ ॥
रहिमनजेहिबिधिबड़कियो तेहि न गर्वकी रेष ॥
भार धरे संसार को तऊ कहावत शेष ८० ॥
रहिमन बड़े निरादरै नजिय न ताकी पौरि ॥
नींद बिचारी आवती मूका मागी दौरि ८१ ॥
बिथाजितीजियमेंतिती हियमें राखौ गोय ॥
पुनिअठिलैहैंलोगसब बांटि न लैहैं कोय ८२ ॥
मुक्ताफलबतिरहीमतेहि फबि आई है जाहि ॥
कुच उतंग नीकेलगैं अनत बतौरी आहि ८३ ॥
बड़े बड़ाई ना तजैं लघु रहीम इतराय ॥
राय करौंदा होत है कटहर होत न राय ८४ ॥

अनुचितउचितरहीमलघ करत बड़ेन के जोर ॥
शशिके रसके भोगते पचवतआगिचकोर८५॥
सरवरके खग एक सम नेह बाढ़ि नहिं धीम ॥
पै मराल के मानसर एकै ठौर रहीम ८६ ॥

सोरठा ॥

पलटि चली मुसकाय दुति रहीमउपजायअति
बाती सी उसकाय मानौ दीन्ही दीपकी८७
रहिमन मोहिंन सोहाय अमीपियावै मानबिन ॥
बरु बिष देय बोलाय मानसहितमरिबोभलो८८
पर घर गये रहीम काकी ना महिमा घटी॥
गंग नाम भयो धीम कौन बतावैंजलधिमैं८९
रहिमन नीर पखान भीजै पै सीजै नहीं ॥
तैसे मूरुख ज्ञान बूझै पै सूझै नहीं ९०
रहिमन कीन्हीं प्रीति साहेब को भावैनहीं ॥
जिनके अनगन मीत हमैं गरीबन कोगनै९१
देत देत सब दीन एक न दीन्हदुःखको॥
सोऊ मरिकै लीन कछू नराख्योदेनको९२

दोहा ॥

रहिमन ओछे नरनते तजो बैर औ प्रीति ॥
काटे चाटे श्वान के दुहूं भांति बिपरीति९३
उरग तुरंग नारीनृपति नीच जाति हथियार ॥
रहिमन इन्हैं संभारिये पलटत लगै न बार ९४

रहिमन अँसुवा बाहिरे बृथा जनावत रोय ।
घरसे बाहर काढ़िये क्यों न भेदकाहिसोय९५
जानि अनेती जे करैं जागतही रहसोय ॥
ताहि जगाय बुझाइबो रहिमनउचित नहोय९६
ते रहीम मन आपनो कीनों चंद्र चकोर ॥
निशि बासर लाग्योरहै कृष्णचंद्र की ओर ९७
मुकता कर करपूर कर चात्रक तृषहर सोय ॥
येतो बड़ो रहीम जल कुथल परे बिष होय९८
शशिकीसुखदसुचांदनी सुंदर सबै सोहाति ॥
लगी चोरचित जोलटी घटी रहीमनकांति ९९
बड़ेन सों कछु घटि कहे नहिं रहीम घटि जाहिं॥
गिरधर मुरलीधर कहे कछुदुख पावतनाहिं१००
शशिसकोचसाहससलिल साजि सनेह रहीम ॥
बढ़त बढ़त बढ़िजात है घटतघटत घटिसीम१०१
रूपक थापक चारिपद कंचन दोहा लाल ॥
ज्योंज्योंनिरखतअलपत्यों मोलरहीमबिशाल१०२
यह रहीम सब संग लै जन्मत जगत न कोय॥
बैर प्रीति अभ्यास यश होत होत पै होय १०३
निजकरिक्रियारहीमयों सिद्धि भयों के साथ॥
पांसो अपने हाथ ज्यों दांव न अपनेहाथ १०४
बड़े दीन के दुख सुने दया होत उर आनि ॥
हरि हाथी से कब हती कहिरहीमपहिंचानि१०५

इतिश्रीरहिमनशतक समाप्तम् ॥

रहीम कवि का जीवन चरित्र ॥

श्रीअब्दुलरहीमखां जिनके पिताकानाम बैरामखां था अकबर बादशाह के मन्त्री थे—ये अरबी और फारसी विद्याओं में तो निपुणही थे किन्तु संस्कृत और हिन्दी में भी अच्छे २ पण्डितों की गणना में थे इन्होंने हिन्दी भाषा में बहुत से दोहे कहे हैं जिनके सुनने से उनकी बुद्धिमानी सूचित होतीहै किसी दोहे में रहीम और किसी में रहिमन अपना उपपद (भोग) डाला है ये दान करने में बड़े उदार चित्त और धर्म्मसम्बन्धी वार्त्ता में सदैव तत्पर रहाकरते थे ॥

— ❦ —